SHODH SAMAGAM

ISSN : 2581-6918 (Online), 2582-1792 (PRINT)

सतत् विकास हेतु पर्यावरणीय जन–जागरूकता का महत्व

आरती यदु, वाणिज्य विभाग
दुर्गा महाविद्यालय, रायपुर, छत्तीसगढ़, भारत

ORIGINAL ARTICLE

Author
आरती यदु
E-mail : arti041284@gmail.com

shodhsamagam1@gmail.com

Received on : 29/01/2026
Revised on : 31/03/2026
Accepted on : 09/04/2026
Overall Similarity : 00% on 01/04/2026

Plagiarism Checker X - Report
Originality Assessment
0%
Overall Similarity

Date: Apr 1, 2026 (03:35 PM)
Matches: 0 / 1378 words
Sources: 0

Remarks: No similarity found, your document looks healthy.

Verify Report: Scan this QR Code

शोध सार

सतत् विकास के लिये पर्यावरण जागरूकता का होना अत्यंत आवश्यक है। यह एक ऐसी विकास प्रक्रिया है जो वर्तमान पीढ़ी की आवश्यकताओं को पूरा करती है बिना भावी पीढ़ी की जरूरतों किये समझौता किये। पर्यावरण और विकास का संतुलन ही सतत् विकास का मूल आधार है। सतत् विकास के लिये पर्यावरण जागरूकता को इस प्रकार समझा जा सकता है जैसे – प्राकृतिक संसाधनों का संरक्षण, संसाधनों का उपयोग समझदारी से करना और उन्हें भविष्य के लिये बचाना। सतत् विकास का मुख्य लक्ष्य है प्रदूषण में कमी – उद्योगों के अनियंत्रित विकास से होने वाली पर्यावरणीय समस्याओं को कम करना, जैसे कि वायु और जलप्रदूषण को नियंत्रित करना, वायु जल और मृदा प्रदूषण को कम करने के लिये जन जागरूकता (जैसे सिंगल यूज प्लास्टिक पर रोक) अत्यंत आवश्यक है। नवीकरणीय ऊर्जा जिसमें सौर ऊर्जा और पवन ऊर्जा जैसे नवीकरणीय ऊर्जा स्रोतों का उपयोग बढ़ाना जो सतत् विकास के लिये जरूरी है। सामुदायिक भागीदारी के अंतर्गत मिशन लाइफ जैसे कार्यक्रमों के माध्यमों से समुदाय को जल संरक्षण, अपशिष्ट प्रबंधन और हरित जीवन शैली के लिये प्रोत्साहित किया जा रहा है। पर्यावरण के लिये संतुलन के लिये अधिक से अधिक पेड़ लगाना और जैव विविधता का संरक्षण करना महत्वपूर्ण है। पर्यावरण संरक्षण और आर्थिक विकास के बीच संतुलन बनाना जरूरी है इसके लिये समाज के हर वर्ग को जागरूक होकर व्यक्तिगत और सामूहिक स्तर पर प्रयास करने होगे।

मुख्य शब्द

सतत् विकास, पर्यावरण, संरक्षण, ऊर्जा स्रोत, प्रदूषण नियंत्रण, हरित जीवन शैली.

प्रस्तावना

सतत् विकास के लिये पर्यावरणीय जन जागरूकता का अभिप्राय है कि हम विकास के साथ पर्यावरण संरक्षण को साथ में लेकर चले और इसके लिये व्यापक स्तर पर जन

जागरूकता की आवश्यकता है। पर्यावरण संरक्षण केवल सरकार की ही जिम्मेदारी नही है वरन् प्रत्येक नागरिक का यह व्यक्तिगत एवं सामाजिक जिम्मेदारी है।

पर्यावरण को एक विषय के रूप में स्कूल, कॉलेज में शामिल तो कर दिया गया है, परन्तु उससे प्राप्त होने वाले निष्कर्ष सिर्फ किताबों तक ही सिमट कर रह गये है। हमे किताबों से निकलकर व्यवाहारिक रूप से बच्चों को पर्यावरण के बारे में सीखाना होगा। असाइनमेंट जमा कराने के बजाये बच्चों को पौधा रोपण, पौधों की सुरक्षा, प्लास्टिक का बहिष्कार या न्यूनतम उपयोग करने, बारिश की पानी का संरक्षण, जल निकायों को प्रदूषण मुक्त करने और उनमें जिम्मेदारी का भाव उत्पन्न करके ही पर्यावरणीय को स्कूली एवं उच्च शिक्षा विभाग में जोड़ना सार्थक होगा।

हमारी आने वाली पीढ़ी वही सीखती और करती है जो वह देखती है घर, स्कूल, समाज में हम अगर पर्यावरण के प्रति जागरूकता दिलायेंगे, घर में शिक्षण क्षेत्र में सार्वजनिक स्थानों में तो वही ज्ञान हमारी भावी पीढ़ी अपने अगली पीढ़ी को देगी।

शोधकर्ता का अनुभव है, अपने गाँव जो कि कुम्हारी के पास लिमतरा का है जहाँ एक 60–65 वर्षीय सम्मानीय व्यक्ति तालाब मंदिर के किनारे वृक्षारोपण एवं उसकी सुरक्षा के लिये कांटे आदि की व्यवस्था करते है उन्हें देखकर उसका पोता लगभग 9–10 वर्ष का बालक बड़ी ही तन्मपता से अपने दादा के कामों में हाथ बंटाता है। पेड़ लगाता है पेड़ों की सुरक्षा करता है।

शोधकर्ता यह कहना चाहता कि हम जो करेंगे हमारी भावी पीढ़ी भी वही करेंगे हम पर्यावरण का संरक्षण करेंगे तो भावी पीढ़ी भी पर्यावरण का संरक्षण करेंगी, हम पर्यावरण को बर्बाद करेंगे तो भावी पीढ़ी भी पर्यावरण को बर्बाद करेगी फैसला अब आपके हाथ में है।

आज लोग भौतिक वादी, विलासिता जीवन में उलझकर अपनी भावी पीढ़ी के लिए सम्पत्ति बनाने में लगी है लेकिन जब पर्यावरण ही नहीं बचेगा तो भावी पीढ़ी कैसे बचेगी। कहने का तात्पर्य यह है कि हम विकास तो करें किन्तु पर्यावरण संरक्षण को अपने जीवन में उसी तरह से शामिल करें जैसे भोजन, पानी, आवास व दवाई तब ही हम आने वाली पीढ़ी को स्वस्थ पर्यावरण दे सकेंगे।

अध्ययन की आवश्यकता

पर्यावरण संरक्षण के लिये जागरूकता इसलिये आवश्यक है ताकि मनुष्य पृथ्वी के संसाधनों का बुद्धिमता पूर्ण उपयोग कर सके, प्रदूषण कम कर सके और आने वाली पीढ़ियों के लिये पारिस्थितकी संतुलन बनाये रख सके। यह जलवायु परिवर्तन, जैव विविधता की हानि और प्लास्टिक कचरे जैसी गंभीर समस्याओं के प्रति लोगों को शिक्षित कर सतत् जीवन शैली को बढ़ावा देती है। पर्यावरण जागरूकता क्यों महत्वपूर्ण है इसके मुख्य कारण हैः

1. **प्राकृतिक संसाधनों की रक्षाः** जन जागरूकता से पानी, बिजली और वन जैसे सीमित संसाधनों की बर्बादी को रोका जा सकता है।
2. **प्रदूषण और कचरा प्रबंधनः** लोग प्लास्टिक के नुकसानों को समझकर और कचरे को कम करके उसे पुर्नचक्रीय करने के लिए प्रेरित होते है।
3. **जलवायु परिवर्तन का सामनाः** यह ग्लोबल वार्मिंग को कम करने और नवीकरणीय ऊर्जा (जैसे – सौर/पवन) के उपयोग को बढ़ावा देने के लिए आवश्यक है।
4. **स्वास्थ के लियेः** स्वच्छ हवा और पानी का सीधा संबंध हमारे स्वास्थ से है। जागरूक होकर हम टी.बी., दमा जैसे रोगों से बच सकते है।
5. **स्थायी भविष्यः** आने वाली पीढ़ियों के लिए पृथ्वी को सुरक्षित रखना आज की पीढ़ी की नैतिक जिम्मेदारी है जो केवल जागरूकता से ही संभव है।

उद्देश्य

1. पर्यावरण क्षरण की अवधारणा की व्याख्या करना।
2. पर्यावरण क्षरण के विभिन्न कारकों की पहचान करना।
3. पर्यावरण क्षरण के बारे में बढ़ती जागरूकता के बारे में जानना।
4. अक्षय विकास की सकल्पना की व्याख्या करना।
5. पर्यावरण संरक्षण के लिए राष्ट्रीय एवं अंर्तराष्ट्रीय वचनबद्धता को पहचानना।

अध्ययन पद्धति

गुणात्मक, विश्लेषणात्मक

पर्यावरण जागरूकता

व्यक्ति के लिये संसाधन बहुत महत्वपूर्ण है इसी पर व्यक्ति का विकास और उसकी जीवन शैली निर्भर करती है। चूंकि पृथ्वी के प्राकृतिक संसाधन तेजी से घट रहे हैं और मानव के कार्य कलापों के कारण हमारे पर्यावरण का अधिकाधिक ह्रास हो रहा है, इसलिये कुछ करना चाहिये।

पर्यावरण संरक्षण केवल जन–जागरूकता के द्वारा ही संभव है। समाचार पत्रों व्यक्ति रेडियों और टेलीविजन जैसे संचार माध्यम जनमत पर जोरदार प्रभाव डालते है। अगर हममें से हर कोई पर्यावरण के बारे में संवेदनशील रहे तो हमे प्रत्येक कार्य पर्यावरण संगत करना चाहिये तथा हमारे प्रयासों को सफल बनाने में अपनी भूमिका अदा करेंगे। पर्यावरण को संतुलित रखने के लिये हमें प्रत्येक कार्य पर्यावरण संगत करना चाहिये तथा अधिक से अधिक संख्या में पृथ्वी पर वृक्ष लगाना चाहिये हममें से हर एक पर अधिक से अधिक लोगों को जागरूक करने का दायित्व है।

राष्ट्रीय और अंर्तराष्ट्रीय प्रयास

भारत में पर्यावरण जागरूकता का महत्व 1970 के दशक में संयुक्त राष्ट्र द्वारा 1972 में स्टाकहोम में पर्यावरण पर सम्मेलन आयोजित करवाने के बाद प्राप्त हुआ। भारत में पर्यावरणीय हित की कई गतिविधियाँ चलाई गई। पर्यावरण और वन मंत्रालय का गठन किया गया और 1986 में पर्यावरण संरक्षण पर कानून लागू किये गये।

निष्कर्ष

पर्यावरण का उपभोग मनुष्य द्वारा किया जाता है तो उसका बचाव व संरक्षण भी हमारा धर्म है, पर्यावरण को बचाने के लिये स्त्रियों ने योगदान दिया है। महिलायें वैदिक काल से ही पर्यावरण संरक्षण के पक्ष में रही हैं उसका उदाः वट वृक्ष, आंवला नवमी, तुलसी पूजा आदि है।

पर्यावरण के गिरते स्तर ने विश्व सामुदाय को चिंतित कर दिया है इसी परिप्रेक्ष्य में पर्यावरण संरक्षण हेतु सन् 1972 में स्टॉकहोम में अन्तर्राष्ट्रीय कान्फ्रेन्स में यह निर्णय लिया गया कि प्रत्येक देश अपने लोगों में पर्यावरणीय शिक्षा के माध्यम से पर्यावरण जागरूकता विकसित करें।

सुझाव

पर्यावरण संरक्षण बेहतर जीवन के लिये आवश्यक है पर्यावरण मनुष्य को शारीरिक एवं मानसिक स्वास्थ प्रदान कर सामाजिक, सांस्कृतिक एवं आर्थिक विकास के लिये अभिप्रेरित करता है। अतः आर्थिक विकास एवं पर्यावरण संरक्षण हेतु सुझाव इस प्रकार हैः

1. पर्यावरण संरक्षण हेतु युवा पीढ़ी को जागृत किया जाना चाहिये।
2. प्राथमिक शिक्षा में भारतीय संस्कृति एवं नैतिक मूल्यों का समावेश किया जाना चाहिए।
3. आर्थिक विकास और पर्यावरण में संतुलन बनाकर चलना अधिक से अधिक पौधा लगाना और सुरक्षित रखना।
4. अधिक उपभोग की संस्कृति का त्याग कर वस्तुओं का उपभोग हिफाजत से किया जाना चाहिए।

संदर्भ सूची

1. गुरूपंच, कुबेर सिंह (2023) पर्यावरण संरक्षण में महिलाओं की भूमिका. *International Journal of Reviews and Research in Social Science,* 2(2), 116.
2. कुमारी, सुनिता (2025) पर्यावरण जागरूकता शिक्षण. *International Journal of Reviews and Research in Social Science,* 5(3), 110, March 2025.
3. धामाणी, राजकिशोर (अक्टूबर 2017) पर्यावरण जागरूकता एवं आर्थिक विकास. *International Journal of Reviews and Research in Social Science,* 9(10), 919.

****